Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

1- एक-कारक सिद्धान्त - बुद्धि का एक-कारक सिद्धान्त

प्राचीन सिद्धान्त है इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि एक ऐसी अविभाज्य इकाई के रूप में कार्य करती है जिसके द्वारा समस्त मानसिक क्रियायें प्रारम्भ, सम्पन्न तथा नियंत्रित होती हैं। बिने, टरमैन, तथा स्टर्न जैसे मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त का समर्थन किया था, परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने कालान्तर में इस सिद्धान्त को लगभग अस्वीकार कर दिया है।

2- द्वि-कारक सिद्धान्त -

द्वि-कारण सिद्धान्त का प्रतिपादन स्पीयरमैन ने सन् 1904 में किया था स्पीयरमैन ने कहा कि बुद्धि दो प्रकार के कारणों से मिल कर बनी है। ये कारण दो प्रकार के होते हैं।

A- सामान्य योग्यता कारण
B- विशिष्ट योग्यता कारण

सामान्य योग्यता कारण को जी-कारक नाम से भी जाना जाता है। यह योग्यता जन्मजात होती है। इसे सामान्य योग्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सभी प्रकार की मानसिक क्रियाओं को करने में इसकी आवश्यकता होती है। विभिन्न व्यक्तियों में इसकी मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। दैनिक जीवन में इसका उपयोग मानव अधिक करता है।

Anoop

Anoop

Notes

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

विशिष्ट योग्यता कारक को स्पीयरमैन ने एस-कारक का नाम दिया, यह विशिष्ट योग्यताओं का एक समूह होता है यह अर्जित योग्यता होती है। विभिन्न प्रकार के मानसिक कार्यों में अलग-अलग विशिष्ट योग्यताओं की आवश्यकता होती है। किसी भी व्यक्ति में विभिन्न विशिष्ट योग्यताएं अलग-अलग मात्रा में उपस्थित होती है। स्पष्ट है कि जी-कारण तथा एस-कारण दोनों मिलकर ही व्यक्ति को किसी मानसिक कार्य को सम्पन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं। स्पीयरमैन ने जी कारक को वास्तविक मानसिक शक्ति कहा है।

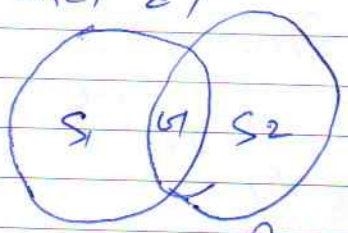

द्वि-कारक सिद्धान्त

3- त्रिकारक सिद्धान्त-

त्रिकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन भी स्पीयरमैन ने किया था, द्वि-कारक सिद्धान्त की कमी को दूर करने के लिए इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था उन्होंने सामान्य योग्यता कारक तथा विशिष्ट योग्यता कारक के साथ एक तीसरा कारक समूह कारक और जोड़ दिया। समूह कारक से तात्पर्य उस कारक से था जो

Anoop

ज और S कारको में समान रूप से विद्यमान रहता है।

4- बहु-कारक सिद्धान्त-

बहु कारक सिद्धान्त का प्रतिपादन भी थार्नडाइक ने किया था इसके अनुसार बुद्धि अनेक स्वतन्त्र कारको से मिलकर बनी है इन स्वतन्त्र कारको में से प्रत्येक कारक किसी विशिष्ट मानसिक योग्यता का आंशिक ढंग से प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति के द्वारा किसी भी मानसिक कार्य को सम्पन्न करने में ऐसे अनेक छोटे-छोटे कारक एक साथ मिलकर सहायता करते है। विभिन्न प्रकार के मानसिक कार्यों में इन छोटे-छोटे कारको के भिन्न-भिन्न समूहो की आवश्यकता होती है। यह सिद्धान्त सामान्य बुद्धि जैसे किसी कारक के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता है।

थार्नडाइक का यह सिद्धान्त वास्तव में बुद्धि का आणविक सिद्धान्त प्रतीत होता है।

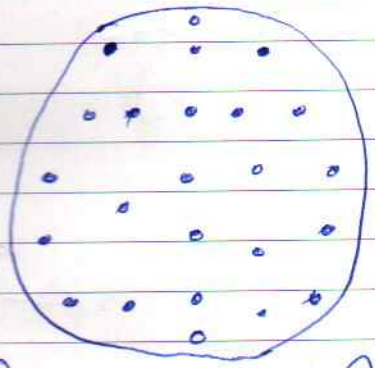

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

बुद्धि का बहु-कारक सिद्धान्त